60th Kerala School Kalolsavam, Nov 28 - Dec 1, 2019 _ Kasaragod

Item Code: 641 Participant Code: 17

मन का इंद्रधनुष गायब नहीं होता

मेरा जीवन का आधार

कुछ तो है मेरे मन में
वह मुझे खुशी देती है
लेकिन मैं नहीं जानती
कि वह क्या है.....

मेरी नींद में आती है वह
सपने की रूप में
हमेशा नींद में आती है
और मन को खुशी देती है।

हर एक व्यक्ति को होती है
यह जीने को प्रेरण करती है
वह है अपना जीवन लक्ष्य
हमारा जीवन का आधार...

कुछ लोगों की मन में वह
डॉक्टर के रूप में है
कुछ लोगों को अध्यापिका
बाकी को कोई और होती है।

लेकिन मेरा तो फर्क है
मुझे वह हिंदी कविता है
वह मुझे जीवन देती है
जीने का शक्ति दिखाती है।

कभी कभी सोचती हूँ कि
मैं क्यों हिंदी कवयत्री बनूँ
जवाब मिली मेरा सवाल का
हिंदी तो इतना मशहूर है।
सिर्फ भारत में नहीं,
इस पूरे धरती पर भी
कितना लोग बोलती है.
हिंदी, हमारा राष्ट्रभाषा।

मेहनत करूंगी पूरा समय
हिंदी कविता को जानने को
हिंदी को और प्रशस्त करने को
जैसे प्रेमचंद करता था।

मेरा मन में रंग भरी वह
इंद्रधनुष के जैसे
मेरा मन में अन भी वह
तारों कि जैसे चमकती है।

सबको होती है इस तरह
किसी जीवन लक्ष्य, लेकिन
पूर्ण करूँगी तो सौ में पाक
मैं बनूँगा वह सौ में एक।

जब तक हमारा मन में है वह
जब तक उसका पालन करती है
वह गायब नहीं होगी तब तक
और हम नहीं हारूँगी ।

एक दिन मरेगी हम सब
लेकिन जब तक रहेंगी धरती
तब तक नहीं मरती
हमारा काम . . .

मैं कहती हूँ की
अब आप सब
ढूँढो अपना लक्ष्य को
अपना जीवन साथी को . . .

जब वह मिलेंगी तब तक ढूँढो
नहीं मिली तो नहीं हारती
जब तक हम नहीं मानेंगी हार
तब तक हम नहीं हारती ।